Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

उत्तराखण्ड का परंपरागत अवनद्ध लोक वाद्य – 'डौंर'

REETA PANDEY[1], BHASHKER DATT KAPRI[2] & DR. GAGANDEEP HOTHI[3]

[1]Research Scholar, Department of Music, D.S.B Campus, Kumaun University, Nainital
[2]Research Scholar, Department of Music, D.S.B Campus, Kumaun University, Nainital
[3]Assistant Professor, Department of Music, D.S.B Campus, Kumaun University, Nainital

शोध सार

गीत-गाथाओं के साथ-साथ लोकवाद्य भी अपरिहार्य रूप से जुड़े हैं। लोक वाद्यों में अवनद्ध वाद्यों का ऐतिहासिक व महत्वपूर्ण स्थान है। उत्तराखंड में भिन्न-भिन्न परंपराओं व गीतों के साथ भिन्न-भिन्न लोक वाद्यों को बजाने की परंपरा है। ऐसा ही एक सुप्रसिद्ध व प्रचलित अवनद्ध लोक वाद्य है- 'डौंर'। उत्तराखण्ड का यह प्रसिद्ध लोक वाद्य मुख्यतः गढ़वाल मंडल व कुमाऊँ के चौखुटिया गेवाड़ घाटी क्षेत्र में बजाया जाता है। इसका प्रयोग इष्ट देवताओं की जागरों, मांगलिक कार्यों, उत्सवों व शुभ अवसरों आदि में प्रचुरता से किया जाता है। गढ़वाल की अपेक्षा कुमाऊँ में इसका प्रचलन कम है। कुमाऊँ में इसे केवल कुमाऊँ-गढ़वाल की सीमा में रहने-बसने वाले लोग ही बजाते हैं। भगवान शंकर जी के डमरु को लोक कलाकार इसी लोक वाद्य 'डौंर' से जोड़ते हैं। इसी से मिलता-जुलता एक लोक वाद्य मध्य प्रदेश में भी बजाया जाता है जिसे 'ढाक' कहा जाता है। लोक संगीत की विशाल परंपरा को जानने हेतु प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तराखंड के लोक वाद्य 'डौंर' के बारे में बताने का प्रयास किया गया है। साथ ही 'डौंर' पर बजने वाली तालों को लिपिबद्ध करने का प्रयास भी किया गया है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य लोगों तक परंपरागत लोक वाद्य डौंर की जानकारी पहुँचाना है।

मुख्य शब्द- लोक वाद्य, डौंर, ताल, तालिपि, कुमाऊँ, निर्माण।

डौंर का निर्माण

इसका आकार डमरू के समान होता है। इसको बनाने हेतु सर्वप्रथम लकड़ी के मोटे टुकड़े को डमरूनुमा आकार में भीतर की ओर से खोखला कर दिया जाता है। इसकी काठ बहुत मोटी तथा आकार में चौकोर व चौड़ी होती है। खामिर व सानण की लकड़ी से बना हुआ डौंर अधिक मजबूत व लंबे समय तक टिकाऊ रहता है।[1]

इसमें लगने वाले पूड़े बकरी, काकड़ व घुरड़ (जंगली हिरण) आदि जानवरों की खाल से मढ़े हुये होते हैं। इन सभी जानवरों के मृत चर्म का प्रयोग प्राचीन काल में अथवा पुराने समय तक देखा जा सकता है। वर्तमान समय में जानवरों के शिकार पर प्रतिबंध लग जाने के कारण किसी भी जानवर को मारना या उसके शरीर के किसी भी अंग का प्रयोग करना कानूनी अपराध के दायरे में आता है। चूँकि प्रत्येक अवनद्ध वाद्य के मुख की मढ़ाई हेतु चर्म की अति आवश्यकता होती है अतः वर्तमान समय में केवल बकरी की खाल का ही प्रयोग किया जाता है। इसके दोनों मुख पर चर्म मढ़ने के बाद इसके दोनों सिरों को परस्पर सुतली से कस दिया जाता है। अंततः इसके मध्य में खींचाव बनाए रखने के लिए एक डोरी की सहायता से इसे बाँधा जाता है।[2]

डौंर वादन की प्रक्रिया

लोक कलाकार इसे बजाने हेतु एक ओर हाथ का प्रयोग व दूसरी ओर लकड़ी के छोटे डंडे (सोटे) का प्रयोग करते हैं। इस चर्म वाद्य को गले पर नहीं लटकाया जाता अपितु दोनों घुटनों के बीच रखकर ऊपर की पूड़ी को दायें हाथ में रखे दंड से तथा दूसरी पूड़ी (बाँयीं) को बाँये हाथ के प्रयोग से बजाया जाता है। गमक पैदा करने के लिए बाएँ हाथ के अंगूठे के नाखून का प्रयोग किया जाता है। इसमें लगभग चौरासी तालों को बजाये जाने का विधान है। इसके साथ कांसे की थाली को लोक वाद्य के रूप में प्रयोग किया जाता है। डौंर की ध्वनि बहुत ही प्रचंड होती है। इसका प्रयोग अधिकतर जागर के लिए किया जाता है।[3]

अल्मोड़ा जनपद के देघाट क्षेत्र के निवासी श्री शम्भू प्रसाद जी की लोक विधाओं में अच्छी पकड़ है। डौंर व हुड़का वादन में उनकी विशेष निपुणता है। शंभू जी के अनुसार डौंर में लोकगीत, भजन व होली-गायन इत्यादि भी किया जाता है। शंभू जी डौंर पर लगभग अठारह से बीस तालों का वादन करते हैं। शंभू जी बताते हैं की कुंभ मेले के अवसर पर उन्होंने 'जागर सम्राट प्रीतम भरतवाण' जी

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

के साथ गायन तथा डौंर वादन भी किया है। डौंर की ध्वनि में प्रचंडता होने के कारण वह इसे वीरता का प्रतीक भी मानते हैं। कुमाऊँ मंडल में इसका प्रयोग मुख्य रूप से घन्याली/घणेली अर्थात परियों को नचाने के लिए ही किया जाता है।[4] इसमें 'सिदुवा-रमौल' की 'श्रीनाथजी' के रूप में जागर लगायी जाती है। गढ़वाली लोक संस्कृति के लेखक डॉ. शिवानंद नौटियाल जी के अनुसार- 'डौंर व थाली' का वादन केवल ब्राह्मणों द्वारा किया जाता है। इसे घणाली, घड़ियाली, घड़ियाला या घड़ियालो कहते हैं। शेष कार्य औजी व दास वर्ग (ढ़ोली) ही करते हैं।[5] डौंर पर बजाई जाने वाली तालें निम्नलिखित हैं जिनका एक आवर्तन एक से डेढ़ सेकेंड की अवधि का है।

श्री शंभू प्रसाद जी कांसे की थाली की संगत के साथ डौंर वादन करते हुए

शम्भू प्रसाद जी द्वारा लोकवाद्य 'डौंर' पर बजाई गई तालों का लिपिबद्धिकरण[6]

ताल- 1 (आठ मात्रा)

1	2	3	4	5	6	7	8
धं	भड़	भं	धं	भं	भं	त	पड़
धं	भड़	भं	धं	भड़	भं	त	पड़
धं	भड़	भं	धं	भड़	भं	धं	s
धं	भड़	भं	धं	धन	भड़	तन	पड़
धं	भड़	भं	धं	भड़	भं	धं	s
धं	भड़	भं	धं	धन	भड़	तन	पड़
धन	भड़	भड़	धं	भड़	भड़	धं	s
धन	भड़	भड़	धन	भड़	भड़	तन	पड़
धन	भड़	भड़	धं	भड़	भड़	धं	s
धन	भड़	भड़	धन	भड़	भड़	तन	पड़

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

धन	भड़	भड़	धन	भड़	भड़	धन	भड़
धन	भड़	भड़	धन	भड़	भड़	तन	पड़
धन	भड़	भड़	धन	भड़	भड़	धन	भड़
धन	भड़	भड़	धन	भड़	भड़	तन	पड़
धं	भड़	भड़	धं	भड़	भड़	धं	s
धं	भड़	भड़	धं	भड़	भड़	धं	s
धं	भड़	भड़	धं	भड़	भड़	धं	भड़
धं	भड़	भं	धं	भं	भं	भं	भं
धं	भड़	भं	भं	भं	भं	भं	भं
धं	भड़	भं	धं	भड़	भं	त	पड़
धं	भड़	भं	धं	भं	भं	त	पड़

ताल – 2 (सात मात्रा)

1	2	3	4	5	6	7
तत्	s	तत्	s	तत्	s	क्ड़
तत्	s	तत्	s	तत्	s	भ्न
भ	भ	भ	भ	म	भ	म
भ	म	भ	भ	म	भ	म
भ	भ	भ	भ	म	भ	म
भ	म	भ	भ	म	भ	म
प	प	भ	भ	म	भ	म
भ	म	भ	भ	म	भ	म
प	प	प	प	भ	भ	म
भ	म	भ	भ	म	भ	म

ताल – 3 (छः मात्रा)

1	2	3	4	5	6
भं	s	प	भं	s	प
भं	s	प	भं	s	प

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

भं	s	प	भं	s	प
धंs	माध	माs	धंs	मता	गिड़
धंs	माध	माs	धंs	मता	गिड़
धंs	मता	गिड़	धंs	मता	गिड़
धंs	मता	गिड़	धंs	मता	गिड़
धंs	धमा	धमा	धंs	मता	गिड़
धंs	धमा	धमा	धंs	मता	गिड़
धंs	माध	माs	धंs	मता	गिड़
धंs	धंs	ss	धंs	धंs	ss

ताल – 4 (दस मात्रा)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धब	ड़ध	बड़	धांs	ss	ताs	sता	ss	ताs	ss
धब	ड़ध	बड़	धांs	ss	ताs	sता	ss	ताs	ss
धब	ड़ध	बड़	धांs	कना	तब	ड़ध	बड़	ताs	गन
धब	ड़ध	बड़	धांs	ss	धब	ड़ध	बड़	धांs	ss
धब	ड़ध	बड़	धांs	ss	ताs	sता	ss	ताs	ss
ताs	sता	ss	ताs	ss	ताs	sता	ss	ताs	ss
धब	ड़ध	बड़	धांs	कना	ताs	sता	ss	ताs	ss
धब	ड़ध	बड़	धांs	ss	धाs	sधा	ss	धाs	ss
धब	ड़ध	बड़	धांs	ss	धाs	sधा	ss	धाs	ss
धब	ड़ध	बड़	धांs	ss	धाs	sधा	ss	धाs	ss
धब	ड़ध	बड़	धांs	ss	धाs	sधा	ss	धाs	ss
ताs	sता	ss	ताs	ss	ताs	sता	ss	ताs	ss
ताs	sता	ss	ताs	ss	ताs	sता	ss	ताs	ss
धब	ड़ध	बड़	धांs	ss	ताs	sता	ss	ताs	ss
धब	ड़ध	बड़	धांs	ss	ताs	sता	ss	ताs	ss

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

ताल – 5 (बारह मात्रा)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धां	s	धां	धां	धां	s	धां	s	धां	धां	धां	s
धां	s	तां	तां	तां	कड़	तां	sक	धां	धां	धां	गड़
धां	s	तां	तां	तां	कड़	धां	sक	धां	धां	धां	गड़
धां	गड़	धां	धां	धां	गड़	धां	गड़	धां	धां	धां	गड़
धां	गड़	धां	धां	धां	गड़	धां	गड़	धां	धां	धां	गड़
धाग	ड़	तां	तां	तां	कड़	धाग	ड़	तां	तां	तां	कड़
धाग	ड़	धां	धां	धां	गड़	धां	s	धां	धां	धां	गड़
धां	s	धां	s	s	गड़	धां	s	धां	s	s	गड़

निष्कर्ष

कुमाऊँ-गढ़वाल की संस्कृति का परिचायक यह अवनद्ध लोक वाद्य 'डौंर' अपने आप में विशिष्ट स्थान रखता है। वाद्यों के बिना कोई भी पर्व, परंपरा या लोकगीत अधूरे लगते हैं। इनके वादन से किसी भी कार्य में उमंग व क्रियाशीलता आ जाती है। संगत के साथ डौंर का प्रयोग एकल वादन में भी होता है। यह स्वयं में मंत्रमुग्ध कर देने वाली कला है। लेकिन आज के समय में इन लोक परंपराओं को जानने व सीखने की लगन भावी पीढ़ी में नहीं दिखाई देती। अपनी लोक परंपराओं को अपनाने की बजाय आज की पीढ़ी का रुझान पाश्चात्य वाद्यों पर अधिक केंद्रित होता जा रहा है। अतः अपनी संस्कृति के संरक्षण-संवर्धन हेतु यह अत्यावश्यक है कि हम् अपनी लोक विधाओं पर ध्यान दें। इस शोध पत्र के माध्यम से डौंर पर बजाई जाने वाली तालों को सीखने में सहायता मिलेगी। इसके अतिरिक्त यदि संभव हो तो इन्हें लोक कलाकारों के सानिध्य में बैठकर या उनके ऑडियो-विडियो रिकार्ड सुनकर भी बजाया जा सकता है।

संदर्भ

1 पेटशाली, जुगल किशोर, उत्तरांचल के लोक वाद्य (प्रकाशन: तक्षशिला, नई दिल्ली, संस्करण – 2002), 69, 70
2 प्रसाद, शंभू (डौंर वादक), रीता पाण्डे द्वारा साक्षात्कार, दिसम्बर 20, 2022, उत्तराखंडी लोक कलाकार मौखिक संग्रह, घुघुती, देघाट, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड.
3 प्रसाद, शंभू (डौंर वादक), रीता पाण्डे द्वारा साक्षात्कार, दिसम्बर 20, 2022, उत्तराखंडी लोक कलाकार मौखिक संग्रह, घुघुती, देघाट, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड.
4 शर्मा, डी.डी., उत्तराखंड ज्ञानकोश (अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी, संस्करण – 2014), 305
5 पेटशाली, जुगल किशोर, उत्तरांचल के लोक वाद्य (प्रकाशन: तक्षशिला, नई दिल्ली, संस्करण - 2002), 71, 72
6 प्रसाद, शंभू (डौंर वादक), रीता पाण्डे द्वारा साक्षात्कार, दिसम्बर 20, 2022, उत्तराखंडी लोक कलाकार मौखिक संग्रह, घुघुती, देघाट, अल्मोड़ा.